

प्रधानमंत्री कार्यालय

# टैगोर सांस्कृतिक सद्भावना पुरस्कार प्रदान करने के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 18 FEB 2019 12:23PM by PIB Delhi

टैगोर सांस्कृतिक सद्भावना पुरस्कार के सभी विजेताओं को मैं हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। 'श्री राजकुमार सिंहाजित सिंह', श्री राम सुतार जी और छायाण्ट का सम्मान, कला का सम्मान है, संस्कृति का सम्मान है और ज्ञान का सम्मान है।

संस्कृति किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु होती है। इसी से राष्ट्र की पहचान और अस्तित्व को शक्ति मिलती है। किसी भी राष्ट्र का सम्मान और उसकी आयु भी संस्कृति की परिपक्वता और सांस्कृतिक जड़ों की मजबूती से ही तय होती है।

भारत के पास तो हजारों वर्षों का एक सांस्कृतिक विस्तार है, जिसने गुलामी के लंबे कालखंड का, बाहरी आक्रमण का भी बिना प्रभावित हुए सामना किया है। ये अगर संभव हो पाया है तो उसके पीछे स्वामी विवेकानंद जी और गुरुदेव रबिंद्रनाथ टैगोर जैसे अनेक मनीषियों का योगदान रहा है।

भारत का सांस्कृतिक सामर्थ्य एक रंग-बिरंगी माला जैसा है, जिसको उसके अलग-अलग मनकों के अलग-अलग रंग शक्ति देते हैं। कोस-कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी यही भारत को बहुरंगी और बहुआयामी बनाते हैं।

भारत की इसी शक्ति को गुरुदेव ने समझा और रबिंद्र संगीत में इस विविधता को समेटा। रबिंद्र संगीत में पूरे भारत के रंग हैं और ये भाषा के बंधन से भी परे हैं।

गुरुदेव, लोक-कला और पारंपरिक नृत्यों को देश की एक संस्कृति का परिचायक मानते थे। मणिपुरी नृत्य के शिक्षक नबाकुमार सिंहा जी इनसे वो कितना प्रभावित थे, ये शांतिनिकेतन में जाकर पता चलता है।

आज टैगोर सम्मान से सम्मानित श्री राजकुमार सिंहाजित सिंह इसी समृद्ध संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजकुमार जी मणिपुरी नृत्य के प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित रहे हैं। उन्होंने मणिपुरी नृत्य परंपरा के माध्यम से सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाई है। आशा है वे भविष्य में भी इस क्षेत्र में अपना योगदान देते रहेंगे। इस पुरस्कार के लिए मेरी ओर से उनको बहुत-बहुत बधाई।

साथियों, गुरुदेव हर सीमा से परे थे। वो प्रकृति और मानवता के प्रति समर्पित थे। गुरुदेव पूरे विश्व को अपना घर मानते थे, तो दुनिया ने भी उन्हें उतना ही अपनापन दिया। आज भी अफगानी लोगों की जुबान पर काबुली वाला की कहानी है। आज भी दुनिया के अनेक शहरों में उनके नाम से जुड़ी स्मृतियां हैं, अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उनके नाम पर चेयर हैं। साढ़े तीन वर्ष पूर्व जब मैं ताजिकिस्तान गया था, तो मुझे वहां पर गुरुदेव की प्रतिमा का लोकार्पण करने का भी सौभाग्य मिला था।

साथियों, ये भी बहुत कम ही होता है कि किसी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में दो देश के प्रधानमंत्री शामिल हों। ये गुरुदेव के प्रति अपनत्व था, उनके प्रति श्रद्धा थी, जो विश्वभारती के convocation में मेरे साथ बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना जी भी मौजूद थीं।

गुरुदेव की रचना 'आमार सोनार बांग्ला' बांग्लादेश की पहचान है, वहां का राष्ट्रगीत है। भारत और बांग्लादेश की इसी साझी सांस्कृतिक विरासत को छायानट ने और मजबूत किया है। छायानट के मानवतावादी और सांस्कृतिक मूल्य गुरुदेव की भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। मैं उन्हें आज के सम्मान के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

साथियों, गुरुदेव की बात करते हुए मैं अकसर गुजरात में बिताए उनके दिनों की भी चर्चा करता हूं। उनके भाई अहमदाबाद के कमिश्नर थे और अपने भाई के साथ रहते हुए उन्होंने कई कविताओं की रचना वहां की थी। गुरुदेव की रचना जन-गण-मन की जो भावना है, उसको एक भारत, श्रेष्ठ भारत के प्रणेता सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सशक्त किया।

मुझे खुशी है कि इन दोनों महानायकों को आज एक और कड़ी जोड़ रही है। श्री राम सुतार जी आज गुरुदेव और सरदार साहब के बीच के सेतु बने हैं। सुतार जी ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के माध्यम से देश को गौरवान्वित किया है। राष्ट्रीय एकता की भावना को सशक्त करने में भारतीयों में गौरव का भाव और मजबूत करने वाले सुतार जी को मैं टैगोर पुरस्कार के लिए फिर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। और अभी मैंने उनके भाषण में सुना है, आयु तो 93 को पार कर गई है, लेकिन उनके भाषण का मूलमंत्र यही था- अभी मुझे बहुत कुछ करना बाकी है। यह हर युवा को प्रेरणा देने वाली बात है।

साथियों, गुरुदेव का कृतित्व और उनका संदेश समय, काल और परिस्थिति से परे है। मानवता की रक्षा के प्रति उनके आग्रह को आज और मजबूत करने की आवश्यकता है। आज दुनिया में जिस तरह की चुनौतियां हैं, उसमें गुरुदेव को पढ़ा जाना, उनसे सीखा जाना, और अधिक प्रासंगिक हैं।

मैं गुरुदेव की पंक्तियों से अपनी बात को विराम दूंगा-

गुरुदेव जी ने लिखा है -

"I slept and dreamt that life was joy.

I awoke and saw that life was service.

I acted and behold, service was joy.

यानी

"मैं सोया और स्वप्न देखा कि जीवन आनंद है।

मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है।

मैंने सेवा की और पाया कि सेवा ही आनंद है।"

हम सभी सेवा का ये भाव यूं ही बनाए रखें, देश की संस्कृति को और समृद्ध करने के लिए कार्य करते रहें, इसी कामना के साथ एक बार फिर आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

राष्ट्रपति जी का मैं धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने समय निकाला और इस प्रसंग की शोभा अनेक गुणा बढ़ाई है। भाई महेश शर्मा जी का भी मैं अभिनंदन करता हूं कि उनके विभाग ने बहुत ही बखूबी इस एक award के माध्यम से उन भावनाओं को जोड़ने का बखूबी प्रयास किया है।

बहुत-बहुत धन्यवाद !!!

\*\*\*

**अतुल तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/तारा**

(रिलीज़ आईडी: 1565973) आगंतुक पटल : 29

प्रधानमंत्री कार्यालय

# योग पुरस्कार वितरण के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 30 AUG 2019 3:00PM by PIB Delhi

मंच पर उपस्थित मंत्रिमंडल में मेरे सहयोगी श्रीमान श्रीपद येशो नाइक जी, पुरस्कार पाने वाले सभी साथी, आयुष सेक्टर से जुड़े Professional, अधिकारीगण, देवियों और सज्जनों !

देश में फिट इंडिया मूवमेंट की शुरुआत के अगले ही दिन आयुष और योग से जुड़े कार्यक्रम में आना, एक अद्भुत संयोग है। आयुष और योग, फिट इंडिया मूवमेंट के बहुत महत्वपूर्ण भागीदार हैं।

साथियों,

आज यहां तीन कार्यक्रम हुए हैं। दो हमारी परंपरा, हमारी विरासत के पुरस्कार और सम्मान से जुड़े हैं और एक Healthcare Infrastructure से जुड़ा। आज हरियाणा में 10 आयुष हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों को लॉन्च किया गया है। इसके लिए मैं हरियाणावासियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

मुझे योग के साधकों, योग की सेवा करने वालों, दुनियाभर में योग का प्रचार-प्रसार करने वाले साथियों और संस्थाओं को पुरस्कार सौंपने का मौका भी मिला है। इनमें इटली और जापान के भी साथी हैं जो दशकों से योग के प्रचार-प्रसार में जुटे हैं। **एंटोनिआ रोज्जि** जी बीते 4 दशकों से पूरे यूरोप में सर्व योग इंटरनेशनल के जरिए योग के प्रचार प्रसार में लगी हुई हैं। इसी तरह **जापान योग निकेतन** के पूरे जापान में हजारों योग केंद्र हैं। ये संस्था भी बीते 4 दशकों से जापान को योग से निरोग रखने का महान काम कर रही है। पुरस्कार पाने वाले सभी साथियों को मैं बधाई देता हूं और उनकी सफलता की कामना करता हूं।

थोड़ी देर पहले आयुष पद्धति को समृद्ध करने वाली 12 हस्तियों के सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया गया है। ये वो साथी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों के उपचार में लगा दिया।

किसी ने योग को माध्यम बनाया तो किसी ने आयुर्वेद को।

किसी ने यूनानी से जनसेवा की तो किसी ने होम्योपैथी से लोगों के जीवन को रोगमुक्त किया।

मैं डाक विभाग को भी बधाई दूंगा, क्योंकि भारत में एक ही सेट में 12 डाक टिकट बहुत ही कम जारी हुए हैं। मुझे विश्वास है कि ये Postal Stamp आयुष के प्रति देशवासियों में नई सोच को विकसित करने में मदद करेंगे।

भाइयों और बहनों,

आज जो डाक टिकट जारी किए गए हैं, उनमें एक दिनशां मेहता जी के नाम पर भी है। दिनशां मेहता, गांधी जी के Physicist भी थे और Naturopathy के समर्पित कार्यकर्ता भी।

गांधी जी कहते थे कि -“**प्राकृतिक चिकित्सा जीवन जीने का तरीका है, किसी इलाज का तरीका नहीं**”। उन्होंने ताउम्र इस बात पर अमल किया और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को जीवन का आधार बनाया।

साथियों,

गान्धी जी ने जो सीखा था, उसके पीछे भारत की Preventive और Curative Healthcare से जुड़ी एक समृद्ध विरासत रही है। हमारे पास हजारों वर्षों पुराना Literature है, वेदों में गंभीर बीमारियों से जुड़े इलाज की चर्चा है। लेकिन दुर्भाग्य से हम अपनी इस पुरातन रिसर्च को, ज्ञान के इस खज़ाने को आधुनिकता से जोड़ने में उतने सफल नहीं हो पाए।

इसी स्थिति को बीते 5 वर्षों से बदलने का हमने प्रयास किया है। इसी के तहत आयुष को भारत के हेल्थकेयर सिस्टम का अहम हिस्सा बनाने पर बल दिया जा रहा है।

मुझे बताया गया है कि आयुष परिवार में सोवा रिग्पा सिस्टम को शामिल किया गया है। आयुर्वेद, योग और नेचुरोपैथी, यूनानी, सिद्धा और होमियोपैथी के बाद **सोवा रिग्पा**, आयुष परिवार का छठा सदस्य हो गया है। इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई।

भाइयों और बहनों,

अगर भारत के हेल्थकेयर सिस्टम को Transform करना है, स्वस्थ समाज का निर्माण करना है तो, हमें holistic सोच के साथ काम करना होगा। पारंपरिक और आधुनिक इलाज की साझा ताकत को मजबूत करना होगा। आयुष और Modern Healthcare का एक साथ, एक बराबर विकास होगा, तभी बेहतर स्वास्थ्य समाधान हम तैयार कर पाएंगे।

साथियों,

आयुष्मान भारत योजना इसी सोच का परिणाम है। इसमें Preventive Healthcare को ध्यान में रखते हुए हेल्थ और वेलनेस सेंटर खोले जा रहे हैं और दूसरी तरफ गंभीर बीमारी के मुफ्त इलाज के लिए **पीएम जनआरोग्य योजना** चलाई जा रही है।

हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, Preventive और Affordable Healthcare का ये एक अनूठा और अभूतपूर्व मॉडल है। इन सेंटर्स में Prevention के भी उपाय हैं और Cure की व्यवस्था भी है।

साथियों,

जब हम देश में डेढ़ लाख हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर खोल रहे हैं, तो आयुष को भूले नहीं हैं। देशभर में साढ़े 12 हजार आयुष सेंटर बनाने का भी लक्ष्य है, जिसमें से आज 10 आयुष हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स का उद्घाटन हुआ है। हमारी कोशिश है कि ऐसे 4 हजार आयुष सेंटर इसी वर्ष तैयार हो जाएं।

जहां तक Affordability की बात है तो आयुष्मान भारत ने गरीब से गरीब व्यक्ति को बेहतर स्वास्थ्य का विश्वास दिया है। आयुष्मान भारत योजना के तहत जितने मरीजों को अब तक मुफ्त इलाज मिला है, वो अगर इसके दायरे में ना होते तो उन्हें 12 हजार करोड़ रुपए से अधिक खर्च करने पड़ते। एक प्रकार से देश के लाखों गरीब परिवारों के 12 हजार करोड़ रुपए की बचत हुई है।

आप कल्पना कर सकते हैं कि जब आयुष्मान भारत जैसी योजना नहीं थी, तब गरीबों को इलाज के लिए कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। इलाज का खर्च उन्हें और गरीब बना देता था।

भाइयों और बहनों,

Prevention और Affordability के साथ-साथ देश में जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर पर तेजी से काम चल रहा है। दो दिन पहले ही सरकार ने देशभर में 75 नए मेडिकल कॉलेज बनाने का भी फैसला लिया है। देश के हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज बनाने के लक्ष्य की तरफ ये एक और बड़ा कदम है।

इससे गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए सुविधाओं में बढ़ोतरी तो होगी ही, साथ ही MBBS कीकरीब 16 हजार सीटें बढ़ेंगी। हाल में बना नेशनल मेडिकल कमिशन कानून भी देश में मेडिकल एजुकेशन और इससे जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने में प्रभावी भूमिका निभाने वाला है।

साथियों,

सिर्फ मॉडर्न मेडिसिन ही नहीं, आयुष की शिक्षा में भी अधिक और बेहतर प्रोफेशनल्स आएंगे, इसके लिए आवश्यक सुधार किए जा रहे हैं। विशेषतौर पर जिस प्रकार टेक्नॉलॉजी का उपयोग किया जा रहा है, वो आयुष को भविष्य के लिए तैयार करने में बहुत मदद करेगा। आयुष ग्रिड का आइडिया भी प्रशंसनीय है। इससे आयुष सेक्टर से जुड़े अनेक Silos को दूर करने में मदद मिलेगी।

भाइयों और बहनों,

आयुष का, मेडिकल का जो ये आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार हो रहा है, उसके लाभ भी व्यापक हैं। Healthcare के साथ-साथ ये भारत में रोजगार निर्माण का बहुत बड़ा जरिया साबित हो रहे हैं।

विशेषतौर पर छोटे-छोटे गांवों-कस्बों, टीयर 2, टीयर-3 शहरों के युवा साथियों को मेडिकल और पैरा मेडिकल एजुकेशन घर के पास ही मिलने की संभावना बनी है।

नए अस्पताल बनने से मेडिकल से जुड़ा एक पूरा इकोसिस्टम वहां डेवलप हो रहा है। इनमें कम पढ़ लिखे युवाओं से लेकर डिग्री, डिप्लोमा धारक युवा साथियों को भी रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं।

भाइयों और बहनों,

साथियों,

आज जब हम 5 ट्रिलियन डॉलर इकॉनॉमी के लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं, तब आयुष की बहुत बड़ी भूमिका रहने वाली है। आने वाले कुछ सालों में भारत में Preventive Healthcare मार्केट का भी बहुत विस्तार होने वाला है। ये बहुत बड़ा अवसर है।

हमें अपने Preventive Healthcare System को पूरी दुनिया के लिए एक आकर्षक ब्रांड के रूप में विकसित करना होगा। दुनिया के 17 देशों के साथ हमने समझौते किए हैं, अभी हमें इसमें और गति लाने की जरूरत है।

साथियों,

योग तो आज पूरे विश्व में जीवन का अहम हिस्सा हो चुका है। बीते 5 वर्षों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर दुनिया भर में जो उत्साह योग के लिए दिखा है वो अभूतपूर्व है। आज योग Wellness के साथ-साथ दुनिया को भारत के साथ जोड़ने का भी बहुत बड़ा माध्यम बन रहा है।

अब हमें योग के अलावा आयुष की दूसरी विधाओं को भी दुनिया भर में पहुंचाने के लिए प्रयास करना है।

साथियों,

अपनी पुरानी परंपराओं को भुला देना और फिर कोई दूसरा बताए तो उसे नए सिरे से सीखना, इस आदत को भी हमें बदलना होगा।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ।

आज हम देखते हैं कि जिस भोजन को हमने छोड़ दिया, उसको दुनिया ने अपनाना शुरू कर दिया। जौ, ज्वार, रागी, कोदो, सामा, बाजरा, सांवा, ऐसे अनेक अनाज कभी हमारे खान-पान का हिस्सा हुआ करते थे। लेकिन धीरे-धीरे ये हमारी थालियों से गायब हो गए। इस खानपान पर गरीबी का टैग लगा दिया गया।

अब हम देख रहे हैं कि इस पोषक आहार की पूरी दुनिया में डिमांड है। आजकल जब हम ऑनलाइन शॉपिंग पोर्टल में जाते हैं तो अक्सर हैरान हो जाते हैं। जिस अनाज को कोई फ्री में लेने के लिए भी तैयार नहीं होता था वो सैकड़ों रुपए किलो के हिसाब से बिक रहा है।

साथियों,

अब समय आ गया है कि Nutrition के इस खज़ाने को फिर से भरा जाए। देश को Millet Revolution पर काम बढ़ाना होगा। किसान Millet उगाएं और Food Processing से जुड़े हमारे उद्योग उनसे ऐसे आकर्षक प्रोडक्ट तैयार करें, जो हर पीढ़ी को पसंद भी आए और उनके खानपान का हिस्सा भी बने।

अहम बात ये है कि millets हर प्रकार की मिट्टी में उगते हैं और पानी भी कम लेते हैं। यानि भारत के पास एक बहुत बड़ा Advantage है। हम पूरी दुनिया के लिए Millets का उत्पादन कर सकते हैं।

इससे Preventive Healthcare के ब्रांड के रूप में भारत का नाम भी होगा, मानवता की सेवा भी होगी और किसान की आमदनी भी बढ़ेगी।

भाइयों और बहनों,

आयुष का एक और पहलू है जिस पर हमें और गंभीरता से काम करने की जरूरत है। भारत में Medical Tourism निरंतर बढ़ रहा है। लेकिन अभी भी इसमें बहुत अधिक स्कोप है। Medical और Meditation के लिए जो भी जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर है, उसको राज्य सरकारों की मदद से तैयार किया जा रहा है।

मेरा आयुष मंत्रालय से विशेष आग्रह रहेगा, कि अलग-अलग मंत्रालयों और विभागों से इस बारे में संपर्क करते रहें। मेडिकल टूरिज्म को हमें देश के हर हिस्से में ले जाना है, विशेषतौर पर नॉर्थ ईस्ट में इसके लिए बहुत संभावनाएं हैं।

साथियों,

ये तमाम प्रयास जब हम सामूहिक रूप से करेंगे तो हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति से 21वीं सदी के भारत की, नए भारत की सेहत भी बनेगी और समृद्धि भी आएगी। अंत में फिर एक बार सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई।

आप देश और दुनिया को फिट बनाए रखने के लिए ऐसे ही काम करते रहें, इसी कामना के साथ आपका बहुत-बहुत आभार।

धन्यवाद !

## PM Modi's speech at award presentation ceremony for co...



\*\*\*\*\*

वीआरआरके/एसएच/

(रिलीज़ आईडी: 1585975) आगंतुक पटल : 133

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Bengali , Bengali , Tamil , Kannada